खंड-3

प्रमुख मुद्दे:

- ब्रिटेन में औद्योगीकरण का उद्भव तथा विस्तार।
- औद्योगीकरण का बदलता हुआ मॉडल तथा अन्य क्षेत्रों में उसका विस्तार।
- समाजवाद तथा मार्क्सवाद एवं यूरोप पर उसका प्रभाव।
- साम्राज्यवाद एवं नया साम्राज्यवाद- एशिया में यूरोपीय शक्तियों का प्रसार तथा अफ्रीका का विभाजन, एशिया-प्रशांत क्षेत्र में अमेरिकी नव साम्राज्यवाद।
- प्रथम विश्वयुद्ध की पृष्ठभूमि एवं प्रभाव।

जानिये:

- ब्रिटिश औद्योगिक क्रांति किस प्रकार एक अप्रत्याशित घटना के रूप में प्रकट हुई? फिर अलग-अलग क्षेत्रों ने परिस्थितियों के अनुकूल औद्योगीकरण के पृथक् मॉडल का विकास किया, कैसे?
- 19वीं सदी के यूरोप में औद्योगीकरण ने किस प्रकार परिवर्तन के एक प्रमुख कारक के रूप में कार्य किया?
- औद्योगीकरण ने एक तरफ मध्य वर्ग की स्थिति को मज़बूत बनाया तो दूसरी तरफ उसने एक औद्योगिक श्रमिक वर्ग को जन्म दिया। इसलिये एक तरफ जहाँ मध्यवर्गीय विचारधारा के रूप में राष्ट्रवाद की प्रगति हुई, वहीं दूसरी तरफ निम्नवर्गीय विचारधारा के रूप में समाजवाद एवं मार्क्सवाद का प्रसार आरंभ हुआ।
- औद्योगिक क्रांति का एक स्वाभाविक परिणाम था- नए साम्राज्यवाद का उद्भव एवं प्रसार। इसने एक भूमंडलीकृत पद्धति को जन्म दिया।
- साम्राज्यवाद, समाजवाद एवं राष्ट्रवाद के बीच तालमेल और टकराहट का परिणाम था- प्रथम विश्वयुद्ध।

-मणिकांत सिंह

■ औद्योगिक क्रांति से क्या तात्पर्य है?

- औद्योगिक क्रांति उत्पादन की पद्धति में एक मूलभूत परिवर्तन को रेखांकित करती है। इसने मानव पर मशीन की सर्वोच्चता स्थापित कर दी। इसके साथ घरेलू उद्योगों का स्थान फैक्ट्री प्रणाली ने लिया तथा ब्रिटिश आर्थिक जीवन का आधार कृषि के बदले उद्योग हो गया। मोटे तौर पर, ब्रिटेन में 1760 से 1820 के बीच ब्रिटेन में होने वाले आर्थिक और सामाजिक रूपान्तरण को 'औद्योगिक क्रान्ति' का नाम दिया गया था।
- वस्तुत: 18वीं सदी के अन्त तक ब्रिटेन एवं पश्चिमी यूरोप में जो आर्थिक-सामाजिक रूपान्तरण हुए थे, उसकी जड़ पिछली तीन-चार शताब्दियों में यूरोप में होने वाले परिवर्तनों में थी, जिसे निम्नलिखित डायग्राम से समझा जा सकता है-

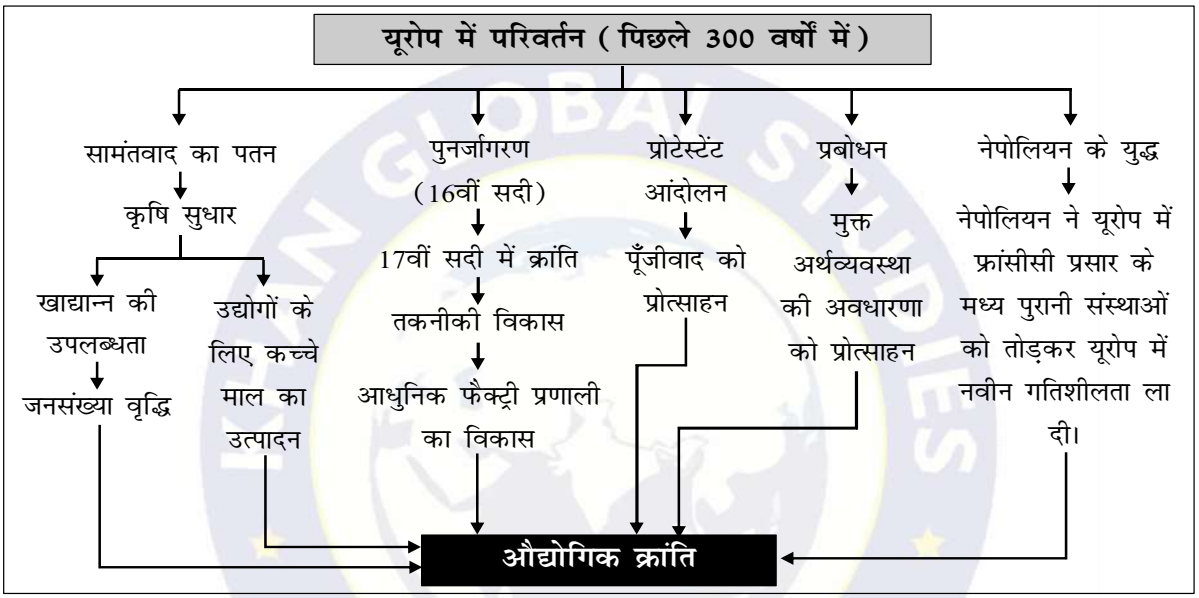

ब्रिटेन में औद्योगिक क्रांति का उद्‌भव

■ औद्योगिक क्रान्ति ब्रिटेन में ही क्यों घटित हुई?

- जैसा कि हम जानते हैं कि व्यापारिक क्रान्ति के क्षेत्र में ब्रिटेन के कई प्रतिद्वंद्वी रहे थे, यथा- स्पेन, फ्रांस, हॉलैंड आदि। तो फिर अन्य देशों को पीछे छोड़ते हुए ब्रिटेन औद्योगीकरण की दिशा में कैसे आगे निकल गया? वस्तुत: उन देशों में व्यावसायिक पूंजी का औद्योगिक पूंजी में रूपांतरण नहीं हो सका, जबकि ब्रिटेन में ऐसा हुआ। इसके निम्नलिखित कारण थे-

1. आंतरिक बाजार के विकास ने वस्तुओं की माँग बढ़ायी-

- कृषि सुधार के परिणामस्वरूप कच्चे माल के साथ खाद्यान्न की उपलब्धता बढ़ी तथा जनसंख्या वृद्धि को प्रोत्साहन मिला।
- 17वीं सदी में इंग्लैण्ड, वेल्स एवं स्कॉटलैण्ड का एकीकरण हुआ, इससे राजनीतिक एकता को बल मिला। जगह-जगह चुंगी लेने की बजाय चुंगी व्यवस्था का मानकीकरण कर दिया गया था, इसलिये वाणिज्य-व्यापार को प्रोत्साहन मिला।
- इस काल में बैंकिंग व्यवस्था एवं मुद्रा सुधार को बल मिला। इससे शाख व्यवस्था बेहतर हुई। फिर चूँकि लोगों की प्रति व्यक्ति आय में भी वृद्धि हुई, इसलिये बाज़ार का भी विस्तार हुआ।
- यातायात एवं संचार व्यवस्था का बेहतर विकास हुआ यथा- पक्की सड़क, नहर एवं आगे रेलवे का निर्माण। पक्की सड़क एवं नहरों के निर्माण ने यातायात व्यवस्था को सुदृढ़ किया। नहरों के माध्यम से खनन उत्पाद के रूप में कोयले को फैक्ट्री स्थल तक पहुँचाना आसान हो गया।

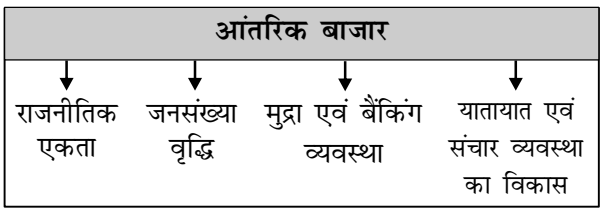

2. बाह्य बाजार का विकास-

- ब्रिटेन को भारत, संयुक्त राज्य अमेरिका एवं कैरेबियाई देशों से पूँजी एवं कच्चे माल की प्राप्ति हो रही थी। ब्रिटेन

में सूती वस्त्र उद्योग के विकास का दिलचस्प पहलू यह है कि वह कच्चे माल एवं बाज़ार, दोनों ही दृष्टियों से विदेशी कारकों पर निर्भर था, अर्थात् भारत से बड़ी मात्रा में कपास प्राप्त हो जाता, फिर भारत वस्त्र बाज़ार की भूमिका निभाता। जहाँ तक पूँजी की बात है तो बताया जाता है कि औद्योगिक क्रांति में ब्रिटेन की लगभग 5% राष्ट्रीय आय का निवेश हुआ, इसमें लगभग 2% केवल भारत से आता था।

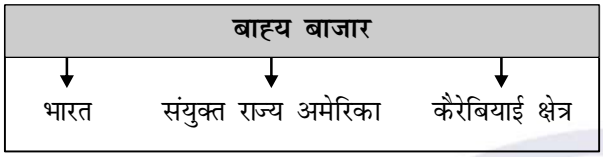

3. तकनीकी विकास-

- व्यावसायिक वस्तुओं की माँग ने उत्पादन को प्रोत्साहन दिया, तो उत्पादन ने तकनीकी विकास को बल प्रदान किया। इसी क्रम में सूती वस्त्र उद्योग और लौह उद्योग के विकास के लिए तकनीकी का विकास हुआ। सूती वस्त्र उद्योग की जरूरत के अनुकूल कताई और बुनाई को प्रोत्साहन मिला, यथा- हरग्रीव्ज की स्पीनिंग जेनी, आर्कराईट का वाटर फ्रेम तथा क्रॉम्पटन का म्यूल, जॉन के का फ्लाईंग शटल और एडमण्ड कार्टराइट का पावर लूम। वहीं लौह तकनीकी के क्षेत्र में डर्बी परिवार के द्वारा कोक के माध्यम से लोहे को गलाने की विधि का विकास हुआ। तकनीकी विकास ही अपने आप में पर्याप्त नहीं होता, सबसे महत्वपूर्ण तत्व है- उसकी सामाजिक स्वीकृति। ब्रिटेन में नवीन तकनीकी को सामाजिक स्वीकृति मिली।

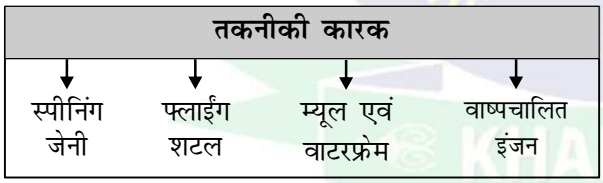

4. सामाजिक परिवर्तन- एक मध्यवर्ग का उद्भव तथा उसके द्वारा बचत एवं निवेश में रुचि ने भी औद्योगिक क्रांति को अपने ढंग से प्रोत्साहन दिया।

■ **औद्योगिक क्रान्ति का ब्रिटेन के समाज पर प्रभाव:-**

- कहा जाता है कि औद्योगिक क्रान्ति ने एक तरफ उत्पादन की समस्या का तो हल किया, परन्तु वितरण की समस्या को जन्म दे दिया अर्थात् इसके परिणामस्वरूप सामाजिक विभाजन और भी बढ़ गया। नये शहर स्थापित होने लगे और गाँव उजड़ने लगे। फिर गांव से विस्थापित होने वाले किसान श्रमिक के रूप में ढल रहे थे। परन्तु शहरों में मूलभूत संरचना (इन्फ्रास्ट्रक्चर) के अभाव में उन्हें बहुत ही अस्वास्थ्यकर स्थिति में काम करना होता। उनके तनख्वाह भी अत्यधिक कम थे। इन कारणों से औद्योगिक क्षेत्र में श्रमिकों की जीवन प्रत्याशा 21 से 17 वर्ष तक हो गयी थी।
- अन्त में, मजदूरों की कष्टप्रद स्थिति की ओर कुछ मानवतावादी चिन्तकों का ध्यान गया। इन्हीं में एक मानवतावादी चिंतक थे उद्योगपति रॉबर्ट ओवन। इन्होंने सरकार का ध्यान श्रमिकों की स्थिति की ओर आकर्षित किया। अत: सरकार के द्वारा 1819 एवं 1833 में श्रमिकों की सुरक्षा के लिए कानून बनाये गये, इतना तक कि 1842 में खनन उद्योग में भी उनकी सुरक्षा के लिए कानून बने।

■ **औद्योगिक क्रान्ति का ब्रिटेन की संस्कृति पर प्रभाव:-**

- औद्योगिक क्रान्ति ने ब्रिटिश सांस्कृतिक जीवन में भी व्यापक बदलाव ला दिया। सांस्कृतिक दृष्टिकोण में दो प्रकार के परिवर्तन देखे गये-

1. लोगों में उपभोक्तावाद की ओर आकर्षण बढ़ रहा था। जिसके कारण मानव करूणा का ह्रास देखा गया अर्थात्, अपने ही समूह के अन्य व्यक्तियों के प्रति संवेदनशीलता कम हो गयी।
2. दूसरी तरफ, बढ़ते हुए शहरीकरण, उजड़ते हुए गाँव, क्षतिग्रस्त हो रही प्रकृति तथा बढ़ती हुई संवेदनहीनता के विरूद्ध स्वाभाविक रूप में प्रतिक्रिया भी हो रही थी और बुद्धिजीवियों का एक वर्ग औद्योगिक क्रान्ति की पूर्व स्थिति की ओर आकर्षण दिखा रहा था। उदाहरण के लिए, सर्वप्रथम इस स्थिति के विरूद्ध प्रतिक्रिया वड्र्सवर्थ, पी. बी. शेली और जॉन किट्स जैसे रोमान्टिक लेखकों ने दिखायी। 19वीं सदी के एक अंग्रेजी उपयान्सकार चार्ल्स डिकेन्स ने अपने उपन्यास 'हार्ड टाईम्स' में ब्रिटिश औद्योगिक क्रान्ति के परिणामस्वरूप लंदन पर पड़ने वाले प्रभाव को दर्शाया है।

प्रश्न:- क्या कारण था कि औद्योगिक क्रांति सर्वप्रथम इंग्लैंड में घटी थी? औद्योगीकरण के दौरान वहाँ के लोगों की जीवन गुणता (quality of life) पर चर्चा कीजिए। भारत में वर्तमान में जीवन-गुणता से वह किस प्रकार तुलनीय है? (UPSC- 2015)

*(**प्रश्न का अर्थ-अन्वेषण:-** इंग्लैंड एवं औद्योगिक क्रांति विश्व इतिहास का एक बहुचर्चित मुद्दा है। ब्रिटेन में लोगों की जीवन-पद्धति पर इसका प्रभाव पड़ा यह भी एक सामान्य मुद्दा है। परंतु यकीनन प्रश्न-चयनकर्त्ता (Question setter) ने वर्तमान भारत के जीवन-स्तर से ब्रिटिश*

जीवन-स्तर की तुलना कर इस प्रश्न को मौलिक एवं जटिल बनाने का प्रयास किया है। इसलिए इस प्रश्न के उत्तरार्द्ध पर विचार करना अभ्यर्थियों के लिए चुनौतीपूर्ण है।)

मॉडल उत्तर:- व्यावसायिक क्रांति में कई देशों ने भागीदारी निभायी थी, परंतु औद्योगीकरण का प्रथम प्रयोग ब्रिटेन में ही हुआ। निम्नलिखित कारकों ने ब्रिटेन में औद्योगीकरण के लिए माहौल निर्मित किया-

17वीं सदी से ही ब्रिटेन आर्थिक-सामाजिक रूपान्तरण की प्रक्रिया से गुजर रहा था। कृषि क्रांति ने खाद्यान्न एवं कच्चे माल की जरूरत को पूरा किया। जमींदार एवं भूस्वामियों ने अपनी भूमि पर बाड़ेबंदी कर पूँजीवादी खेती की शुरूआत की। दूसरी तरफ, व्यावसायिक क्रांति के परिणामस्वरूप एक मध्य वर्ग उभरकर आया तथा इस वर्ग ने बचत एवं निवेश में रूचि ली। फिर वही समय था जब यातायात के सुगम साधन के रूप में नहर तथा पक्की सड़कों का विकास हुआ। साथ ही, इस काल में मुद्रा तथा बैंकिंग को प्रोत्साहन मिला। इन कारणों से ब्रिटेन का आंतरिक बाजार विकसित हुआ। फिर ब्रिटेन का बाह्य बाजार भी काफी व्यापक था। उसके उपनिवेश अमेरिका, वेस्टइंडीज तथा एशिया में स्थापित थे, जहाँ से उसे कच्चे माल के साथ-साथ पूँजी प्राप्त हो रही थी। अंत में, तकनीकी क्रांति ने औद्योगिक क्रांति के उद्‌भव में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। तकनीकी क्रांति के बिना आधुनिक फैक्ट्री प्रणाली का विकास संभव नहीं था। स्पीनिंग जेनी, वाटर फ्रेम, पावर लूम आदि के विकास ने सूती वस्त्र उद्योग को प्रोत्साहन दिया। फिर स्टीम इंजन के विकास ने आधुनिक फैक्ट्री प्रणाली की नींव रख दी।

औद्योगिक क्रांति की आरम्भिक अवस्था में ब्रिटेन में लोगों को अत्यधिक पीड़ा झेलनी पड़ी। जमींदारों के द्वारा बाड़ेबंदी किए जाने के कारण छोटे किसान भूमि से वंचित हो गए तथा शहर की ओर पलायन कर गए। वहाँ उन्हें बहुत कम वेतन तथा भत्ते पर एवं बड़ी ही अस्वास्थ्यकर स्थिति में कार्य करना पड़ता। परंतु क्रमिक रूप में उनकी स्थिति में सुधार हुआ। सरकार ने भी उनकी सुरक्षा के लिए 1819 तथा 1833 में श्रम कानून बनाए तथा बढ़ते हुए औद्योगीकरण के साथ उनके जीवन स्तर में सुधार हुआ।

भारत की स्थिति ब्रिटेन से बिल्कुल अलग है। सही मायने में भारत औद्योगीकरण की प्रक्रिया से गुजर ही नहीं सका। इसलिए वर्तमान में भी पचास प्रतिशत से अधिक जनसंख्या कृषि पर निर्भर है, जबकि संपूर्ण जीडीपी में कृषि का अशंदान लगभग 15 प्रतिशत ही है। अगर विनिर्माण क्षेत्र का विकास होता, तो कृषि पर जनसंख्या का अधिभार कम किया जा सकता था। परंतु ऐसा नहीं हो सका है। हम सेवा क्षेत्र में अवश्य आगे बढ़े हैं, परंतु वह क्षेत्र उच्च प्रोफेशनल को ही स्तरीय रोजगार दे सका है। दूसरी तरफ, पर्यावरण एवं आर्थिक उदारीकरण की दोहरी मार से किसान परेशान हैं। अभी भी लगभग एक चौथाई जनसंख्या गरीबी रेखा से नीचे है। इसलिए लोगों के जीवन-गुणता में अपेक्षित सुधार नहीं हो सका है।

■ **अन्य क्षेत्रों में औद्योगिक क्रांति का विस्तार**-

- औद्योगीकरण का प्रथम प्रयोग ब्रिटेन में हुआ तथा ब्रिटेन से इसका विस्तार अन्य क्षेत्रों में हुआ। ब्रिटिश औद्योगीकरण अनियोजित रहा था अर्थात् इसके लिए कोई योजना नहीं बनी थी। परंतु ब्रिटेन के पश्चात् चाहे जिस देश में भी औद्योगीकरण घटित हुआ, वहाँ यह सुनियोजित था। फिर, एक क्षेत्र में होने वाला औद्योगीकरण स्वाभाविक रूप में दूसरे क्षेत्र में विऔद्योगीकरण (उद्योगों के पतन) को प्रोत्साहन देता है। इसलिये जब एक क्षेत्र में औद्योगीकरण आरंभ हो जाता है, तो दूसरे क्षेत्र के लिए अपने उद्योगों को बचाना कठिन हो जाता है। अत: जिन देशों ने परंपरागत पद्धति से उत्पादन करना जारी रखा, वहाँ विऔद्योगीकरण का खतरा उत्पन्न हुआ। उदाहरण के लिए, भारत एवं चीन। दूसरी तरफ, अपने आप को बचाने के लिए जो भी देश औद्योगीकरण की दिशा में आगे बढ़े, उन्हें ब्रिटिश मॉडल से पृथक कोई ऐसा मॉडल अपनाना था, ताकि ब्रिटिश उत्पादों से प्रतिस्पर्द्धा करते हुए भी वे औद्योगीकरण की दिशा में प्रगति कर सकें। इस संदर्भ में हम औद्योगीकरण के अमेरिकी मॉडल, जर्मन मॉडल, रूसी मॉडल तथा जापानी मॉडल को समझ सकते हैं।

औद्योगीकरण का अमेरिकी मॉडल

- जैसा कि हम जानते हैं कि स्वतंत्रता के पश्चात् संयुक्त राज्य अमेरिका औद्योगीकरण की दिशा में आगे बढ़ा, परंतु इस दिशा में प्रगति करने से पूर्व उसके समक्ष सबसे बड़ी चुनौती थी अपनी व्यापारिक संरचना के स्वरूप में परिवर्तन लाना। स्वतंत्रता से पूर्व वह ब्रिटिश औद्योगिक उत्पादों का आयातक और कृषि उत्पादों का निर्यातक रहा था क्योंकि ब्रिटिश के द्वारा उस पर वाणिज्यवादी नीति थोपी गई थी। इसके अलावा, संयुक्त राज्य अमेरिका में उचित इन्फ्रास्ट्रक्चर का अभाव था, यथा- यातायात और संचार व्यवस्था, एक संगठित बैंक एवं मुद्रा प्रणाली आदि। अत: संयुक्त राज्य अमेरिका ने औद्योगीकरण का एक पृथक् मॉडल विकसित किया, इसका बल निम्नलिखित कारकों पर रहा था-

1. **नये संविधान पर आधारित एक शक्तिशाली संघीय सरकार:**- 1790 ई. में एक शक्तिशाली संघीय सरकार की स्थापना हुई, जिसने संयुक्त राज्य अमेरिका को एक एकीकृत बाजार के रूप में विकसित करने में अहम भूमिका निभाई।

2. **अमेरिकी उद्योगों को संरक्षण:-** यूरोपीय उत्पादों के साथ प्रतिस्पर्द्धा करने के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका ने एक प्रकार की चुंगी व्यवस्था कायम की, जो अमेरिकी औद्योगीकरण की मानक मॉडल बन गयी। संयुक्त राज्य अमेरिका की इस संरक्षणवाद की नीति ने उसे विश्व की सबसे बड़ी औद्योगिक शक्ति बना दिया। एक अमेरिकी अर्थशास्त्री एवं राजनीतिज्ञ हैमिल्टन ने संरक्षणवादी नीति पर विशेष बल दिया था।

3. **आधुनिक यातायात एवं संचार व्यवस्था का विकास:-** इसने आंतरिक बाजार को जोड़ने में अहम भूमिका निभाई। उदाहरण के लिए, संघीय सरकार ने कुछ प्रमुख सड़कें एवं नहरें निर्मित करवायीं जिनमें एक थी कम्बरलैंड रोड। इसके अतिरिक्त हाईवे और सुपर-हाईवे, रेलवे तथा आगे एयरपोर्ट भी बनाने के लिए कदम उठाए गए।

4. **प्राथमिक शिक्षा को प्रोत्साहन:-** अमेरिकी मॉडल की सफलता का एक महत्वपूर्ण कारण था अमेरिकी सरकार के द्वारा प्राथमिक शिक्षा को व्यापकता में लागू करना। उदाहरण के लिए, 1830 में प्राथमिक स्कूल मॉडल को लागू किया गया। इसका एक उद्देश्य था जनसामान्य अमेरिकी को मूलभूत शिक्षा प्रदान करना, ताकि वह व्यावसायिक बातों और औद्योगीकरण को महत्व दे सके।

5. **नेशनल बैंक की स्थापना:-** औद्योगीकरण के लिए साख व्यवस्था को मजबूत करने के उद्देश्य से नेशनल बैंक की स्थापना की गई। प्रथम एवं द्वितीय बैंक, जिन्हें बैंक ऑफ यूनाइटेड स्टेट्स के नाम से जाना गया क्रमश:, 1796 और 1816 ई. में स्थापित किए गए। साथ ही, मुद्रा एवं बीमा पद्धति का भी विकास किया गया।

- संरक्षणवादी नीति के कारण संयुक्त राज्य अमेरिका का औद्योगीकरण ब्रिटेन से पृथक दिशा में चला गया। फिर ब्रिटेन की तुलना में संयुक्त राज्य अमेरिका में श्रम महंगा था। अत: उसने अनुसंधान और विकास के माध्यम से सबसे बेहतर तकनीकी विकसित करने का सफल प्रयास किया। जिसके कारण अमेरिकी अर्थव्यवस्था उच्च तकनीकी एवं महंगे श्रम वाली अर्थव्यवस्था बनी रही। इसलिए जिस किसी भी देश ने अमेरिकी औद्योगिक मॉडल को अपनाने का प्रयास किया, उसे बहुत समस्याएं झेलनी पड़ीं।

औद्योगीकरण का जर्मन मॉडल

- औद्योगीकरण के क्षेत्र में जर्मनी को एक पृथक् चुनौती का सामना करना पड़ा था और उसने उस चुनौती का समाधान भी अपने ढंग से करने का प्रयास किया। इसी ने जर्मन औद्योगीकरण को एक नई दिशा दे दी।

- **जर्मनी के समक्ष चुनौतियाँ:-**

1. जर्मन क्षेत्र लगभग 300 से अधिक राज्यों में विभाजित था, इसलिए उसका आंतरिक बाजार भी विभाजित था। साथ ही, विधि व्यवस्था, प्रशासनिक व्यवस्था ये सभी विभाजित थीं।
2. कुछ क्षेत्रों में सामंतवाद अभी भी कायम था। इस कारण अपेक्षित संख्या में श्रमिकों की कमी थी।
3. ब्रिटेन के विपरीत यहाँ निवेश के लिए निजी पूंजी का अभाव था।
4. जर्मनी में एक प्रकार का पितृसत्तावादी कानून प्रचलित था जिसके तहत एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में लोगों के बसने की पाबंदी थी।

- **औद्योगीकरण की दिशा में जर्मनी की प्रगति:-**

1. नेपोलियन के अंतर्गत विभाजित जर्मन क्षेत्रों के पुनर्संगठन से बाजार के एकीकरण की आधारशिला बनी। इसके अलावा, सामंतवाद का अंत, नेपोलियन कोड को लागू करना आदि कारणों से भी जर्मन अर्थव्यवस्था को गति मिली।
2. वियना कांग्रेस के द्वारा प्रशा को जो राईनलैंड का भूभाग दिया गया था, वह कोयले का भंडार था। इससे प्रशा में औद्योगीकरण को प्रोत्साहन मिला ।
3. प्रशा की आर्थिक सफलता के कारण जर्मन राज्यों का प्रशा के साथ आर्थिक एकीकरण हो गया तथा इस क्रम में 1834 में चुंगी संघ (जॉल्वेरिन) की स्थापना हुई।
4. 1849 में जर्मनी में पितृसत्तावादी कानून की समाप्ति के बाद एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में श्रमिकों की आवाजाही बढ़ गई।
5. जर्मन औद्योगीकरण के मॉडल को प्रेरित करने में फ्रैडरिक लिस्ट नामक एक अर्थशास्त्री का विशेष योगदान रहा था। वह अमेरिकी मॉडल से प्रभावित था तथा एडम स्मिथ की मुक्त अर्थव्यवस्था के मॉडल के विपरीत वह संरक्षणवाद की नीति का प्रबल समर्थक था।
6. जर्मनी के आंतरिक बाजार को विकसित करने में दो अन्य कारकों की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही- एक था 1830-40 के दशक में रेलवे का विकास और दूसरा, प्राथमिक शिक्षा पर बल।
7. जर्मन औद्योगीकरण को वास्तविक प्रोत्साहन 1870 में जर्मनी के एकीकरण के पश्चात् ही मिला क्योंकि जर्मन सरकार ने उसमें सक्रिय भूमिका निभाई। औद्योगिक निवेश में ज्वॉइंट स्टॉक बैंक ने भूमिका निभाई।

- **प्रभावः**- औद्योगीकरण के कारण जर्मनी इलेक्ट्रिकल्स उद्योग, रसायन उद्योग और मोटरवाहन उद्योग में ब्रिटेन से काफी आगे निकल गया। वस्तुतः ब्रिटेन ने औद्योगिक क्षेत्र में पिछले 100 वर्षों में जो हासिल किया था वह जर्मनी ने मात्र 30 वर्षों में हासिल कर लिया। इसका एक तार्किक परिणाम था ब्रिटिश और जर्मन साम्राज्य के बीच बाजार के लिए प्रतिस्पर्द्धा। दूसरी तरफ, एकीकृत जर्मनी ने यूरोप के शक्ति संतुलन में एक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन ला दिया, इसी का नतीजा था- दो विश्वयुद्ध।

रूस में औद्योगीकरण

■ **औद्योगीकरण के मार्ग में कठिनाइयाँः**-

1. रूस एक महाद्वीपीय आकार वाला देश था तथा इसके पास अपार संसाधन थे, परंतु इसका अधिकांश भाग ठंड से ग्रस्त था।
2. रूसी समाज अत्यधिक परंपरागत था तथा वहाँ दास व्यवस्था प्रचलित थी।
3. रूस में उद्योगों में निवेश के लिए निजी पूँजी का अभाव था।

■ **औद्योगीकरण की दिशा में रूस की प्रगति**-

- सर्वप्रथम इस दिशा में प्रयोग एक रूसी शासक पीटर द ग्रेट ने किया था परंतु उसे सफलता नहीं मिली। वास्तविक रूप में औद्योगीकरण की प्रगति 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध में जार अलेक्जेंडर द्वितीय के काल में हुई, जिसने 1861 में दास व्यवस्था का उन्मूलन किया तथा औद्योगीकरण को स्पष्ट रूप में प्रोत्साहन दिया।
- वस्तुतः रूसी औद्योगीकरण गेरशेनक्रॉन मॉडल (Gerschenkron Model) पर आधारित था। इसके अनुसार, जो औद्योगीकरण के क्षेत्र में बाद में आता है उसके लिए आवश्यक नहीं है कि वह प्रथम औद्योगीकृत देश के मॉडल को अपनाने का प्रयास करे, बल्कि उसे अपना मॉडल स्वयं विकसित करना चाहिए। इस क्रम में उसका यह मानना था कि जो देश औद्योगीकरण के क्षेत्र में बाद में आता है, वहाँ सरकार को सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। अतः रूस के औद्योगीकरण में सरकार ने उत्पादक, निवेशक और खरीददार की भूमिका निभाई। इसलिए रूसी औद्योगीकरण के निम्नलिखित लक्षण प्रकट हुए-

1. राज्य ने निवेशक की भूमिका निभाई तथा निवेश की रकम को पूरा करने के लिए एक तरफ विदेशी कर्ज लिया, तो दूसरी तरफ किसानों पर अत्यधिक कर लगाया। इसलिए प्रथम विश्वयुद्ध तक रूस, यूरोप का सबसे कर्जदार देश बन गया तथा किसानों में भी असंतोष हुआ।
2. राज्य ने स्वयं उत्पादक की भूमिका निभाई, इसलिए रूसी औद्योगीकरण किसी स्वतंत्र मध्यवर्ग को जन्म नहीं दे सका।
3. रूसी औद्योगीकरण का बल पूँजीगत उद्योगों पर था, न कि उपभोक्ता संबंधी उद्योगों पर।

■ **प्रभावः**- जब भी हम रूस में औद्योगीकरण के प्रभावों का परीक्षण करते हैं, तो हमें ज्ञात होता है कि एक प्रकार से रूसी औद्योगीकरण ने रूसी क्रांति के साथ-साथ कम्युनिस्ट पार्टी की सफलता का मार्ग तैयार किया। उदाहरण के लिए, किसानों पर अत्यधिक कर लगाए जाने के कारण किसान नाराज थे, अतः वे क्रांति में शामिल हो गए। फिर निम्नलिखित दो कारकों ने कम्युनिस्ट पार्टी की सफलता में अपना योगदान दिया-

- प्रथम, जैसा कि हम जानते हैं कि रूसी औद्योगीकरण ने स्वतंत्र मध्यवर्ग को जन्म नहीं दे सका, अतः वहाँ मध्यवर्ग कमजोर था। इसलिए जब रूस में कम्युनिस्ट पार्टी का उदय हुआ तब मध्यवर्ग रूस में कम्युनिस्ट आंदोलन का मुकाबला नहीं कर सका। द्वितीय, रूस में अधिकांश उद्योग कुछ खास क्षेत्रों में ही स्थापित हुए। इसलिए रूसी औद्योगीकरण के परिणामस्वरुप श्रमिकों में तेजी से वर्गीय चेतना विकसित हुई तथा इसने 1917 ई. की बोल्शेविक क्रांति की पृष्ठभूमि निर्मित कर दी और अंततः रूस में कम्युनिस्ट पार्टी को सफलता मिली।

जापान का औद्योगीकरण

- जापान ने औद्योगीकरण का एक पृथक मॉडल तैयार किया। इसका कारण था औद्योगीकरण के मध्य जापान के द्वारा पृथक् चुनौतियों का सामना किया जाना।

■ **चुनौतियाँः**-

1. जापान पश्चिमी साम्राज्यवाद का शिकार था। इसने चुंगी लगाकर अपने उद्योगों को संरक्षण देने का अधिकार भी खो दिया था। अतः चुनौती यह थी कि अपने नवस्थापित उद्योगों का संरक्षण किस प्रकार किया जाए।
2. जापान में बैंकरों का एक समूह था जिसके पास निवेश के लिए रकम थी, परंतु वह उद्योगों के बजाय भूमि के क्षेत्र में निवेश करने में रुचि ले रहा था क्योंकि भूमि में निवेश करना उसे सस्ता दिख रहा था।

■ **औद्योगीकरण के क्षेत्र में जापान की रणनीतिः**-

1. 1868 की मेइजी पुनर्स्थापना के पश्चात् जापान ने अपनी प्रशासनिक संरचना, विधि व्यवस्था तथा सरकार के स्वरूप में यथासंभव संशोधन लाया, जिससे जापान के आधुनिकीकरण को बल मिला।
2. जापान ने औद्योगीकरण के अमेरिकी मॉडल के एक महत्वपूर्ण पहलू, प्राथमिक शिक्षा के विकास की रणनीति को अपनाया। परंतु उस मॉडल के विपरीत सस्ते श्रम की स्थिति को देखते हुए उसने सूती वस्त्र उद्योग, रेशमी वस्त्र

उद्योग जैसे उपभोक्ता संबंधी उद्योगों की स्थापना पर बल दिया।

3. फिर जापान ने यातायात और संचार व्यवस्था के विकास के क्रम में रेलवे और फिर मोटरवाहन उद्योग आदि के विकास पर बल दिया गया।
4. चूँकि जापान को आरंभ में चुंगी के माध्यम से अपने उद्योगों को संरक्षण देने की स्वतंत्रता (ऐसा 1911 के पश्चात् ही संभव हुआ) नहीं थी, बदले में उसने उद्योगों को सब्सिडी देकर इसकी क्षतिपूर्ति करनी चाही।

■ **विशेषताएँ:-**

1. चूँकि आरंभ में बैंकरों ने उद्योगों में निवेश करने में रुचि नहीं दिखाई थी, अत: राज्य ने अपनी पहल पर उद्योगों की स्थापना की तथा सामरिक महत्व के उद्योगों को छोड़कर शेष उद्योगों को निजी पूँजीपतियों के हाथों में बेच दिया। इस कारण जापान के औद्योगीकरण ने किसी नए वर्ग को जन्म नहीं दिया, अपितु बैंकरों का एक वर्ग ही उद्योगों को खरीदकर औद्योगिक वर्ग में परिवर्तित हो गया।
2. सामान्यत: ऐसा देखा गया कि पूँजीवाद के विकास की चरम अवस्था में ही औद्योगिक पूँजी और बैंकिंग पूँजी आपस में मिलकर एकाधिकारवादी पूँजीवाद को प्रोत्साहन देती है। परंतु जापान में यह आरंभिक अवस्था में ही आ गई क्योंकि बैंकर ने ही उद्योग खरीद लिए। उदाहरण के लिए, जापान में पूँजीपतियों का एक जैबात्सु परिवार था जिसके पास कुल बैंकिंग पूजी का 34% था। इसके अतिरिक्त उसके पास उद्योग भी आ गए।
3. जापान पश्चिमी मॉडल की तरफ आकर्षित हुआ तथा उसकी तकनीकी को तेजी से अपनाया। परंतु उसने पश्चिम से उदारवादी विचारधारा को नहीं लिया, बल्कि उस पर समुराई संस्कृति ही हावी रही। इसलिए जापानी औद्योगीकरण ने पूँजीवाद का एक अनोखा मॉडल तैयार किया।

■ **प्रभाव:-** जापान में औद्योगीकरण का व्यापक विस्तार हुआ था, वहीं जापान के पूँजीवाद पर एकाधिकारवाद का प्रभाव था। साथ ही, जापान समुराई संस्कृति से प्रेरित था। इन सब का मिला-जुला प्रभाव था जापान में सैन्यवाद का उद्‌भव, जिसने पहले एशिया-प्रशांत क्षेत्र में जापान को एक साम्राज्यवादी शक्ति के रूप में स्थापित किया, फिर उसे द्वितीय विश्वयुद्ध में उलझा दिया।

औद्योगिक क्रांति: एक निरंतर क्रांति

■ **प्रथम औद्योगिक क्रांति (1760-1840 ई.):-** वाष्पचालित इंजन, सूती वस्त्र, ऊनी वस्त्र एवं लौह उद्योग, पश्चिमी यूरोप तक सीमित।

- **प्रभाव** - मुक्त अर्थव्यवस्था की नीति एवं बाजार की खोज।

■ **द्वितीय औद्योगिक क्रांति (1860-1914 ई.):-** विद्युत शक्ति, पेट्रोलियम तथा अंतर्दहन इंजन, ऑटोमोबाईल उद्योग, टेलीग्राफ का विकास, वायुयान का विकास। मध्य यूरोप, पूर्वी यूरोप तथा एशिया में जापान में प्रसार।

- **प्रभाव:-** साम्राज्यवाद का प्रसार तथा अफ्रीका का विभाजन, ब्रिटेन तथा जर्मनी के बीच प्रतिस्पर्धा के परिणामस्वरूप प्रथम विश्व युद्ध।

■ **तृतीय औद्योगिक क्रांति:-** (1990 के दशक तथा उसके पश्चात्) रिफीन नामक विद्वान में तृतीय औद्योगीकरण की अवधारणा दी है। इसका आधार सूचना प्रौद्योगिकी एवं नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत को माना जाता है।

- भारत पिछली दो औद्योगिक क्रांति से वंचित रह गया था, किन्तु वह तृतीय औद्योगिक क्रांति से जुड़ गया।
- **प्रभाव:-** तृतीय औद्योगिक क्रांति ने 1990 के दशक में पूर्वी यूरोप की समाजवादी सरकारों को और 2011 में अरब देशों में तानाशाही सरकारों को हिला दिया।

■ **चतुर्थ औद्योगिक क्रांति:-** हाल में चतुर्थ औद्योगिक क्रांति की परिकल्पना की गई है। आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस, रोबोटिक्स, जीनोम तकनीकी, नैनो तकनीकी, आदि से इसे जोड़ा जाता है।

प्रश्न : विलम्ब से होने वाली जापानी औद्योगिक क्रांति में कुछ ऐसे कारक भी थे जो पश्चिमी देशों के अनुभव से बिल्कुल भिन्न थे। विश्लेषण कीजिए। (UPSC- 2013)

उत्तर:- जापान के औद्योगीकरण का अध्ययन बहुत ही दिलचस्प तथ्य रहा है क्योंकि जापान प्रथम गैर-यूरोपीय देश रहा था जिसने औद्योगीकरण तथा साम्राज्यवाद के मोर्चे पर पश्चिमी शक्तियों के समक्ष बड़ी चुनौती खड़ी कर दी थी। किंतु चूंकि जापान की आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक परिस्थितियाँ पश्चिमी देशों की परिस्थितियों से भिन्न थीं, इस कारण से जापान ने औद्योगीकरण के लिए एक पृथक मार्ग ग्रहण किया। यही वजह है कि जापान के औद्योगीकरण का स्वरूप पश्चिमी औद्योगीकरण से भिन्न रहा।

वस्तुत: जापान का औद्योगीकरण उस आधुनिकीकरण कार्यक्रम का हिस्सा था जो मेईजी पुनर्स्थापना के साथ आरंभ हुआ था तथा जिसका उद्देश्य रहा था पश्चिमी साम्राज्यवाद की चुनौती को स्वीकार करना। फिर जापान के औद्योगीकरण के लिए पूंजीगत एवं भारी उद्योगों की स्थापना आवश्यक थी। राज्य के द्वारा पहले इस क्षेत्र में निजी पूंजी को आकर्षित किया गया, किंतु जब निजी निवेशकों ने इसमें रूचि नहीं दिखायी, तो फिर सरकार के द्वारा स्वयं बड़े एवं भारी उद्योगों की स्थापना की गई तथा फिर इन उद्योगों में केवल सामरिक महत्व के उद्योगों को छोड़कर अन्य उद्योगों को सब्सिडी दर पर निजी पूंजीपतियों के

हाथों बेच दिया गया। इसके निम्नलिखित परिणाम सामने आए। प्रथम, जापान के औद्योगीकरण ने किसी नये वर्ग को जन्म नहीं दिया, अपितु बैंकरों का एक वर्ग ही उद्योगों को खरीदकर उद्योगपतियों के रूप में ढल गए। दूसरे, जापान में आरम्भ में ही पूंजीवाद एकाधिकारवाद के चरण पर पहुंच गया। उसी प्रकार, जापान के आधुनिकीकरण तथा औद्योगीकरण कार्यक्रम मध्यवर्ग के अंतर्गत नहीं, अपितु सामंतों के एक वर्ग के अंतर्गत क्रियान्वित किया गया। इसके अतिरिक्त चूंकि जापान का घरेलू बाजार छोटा था, इसलिए जापान के उद्योगों को आरंभ से ही बाह्य बाजार पर निर्भरता रही। उपर्युक्त सभी कारकों ने जापान में सैन्यवादी एवं साम्राज्यवादी प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन दिया। इसका दूरगामी परिणाम था पर्लहार्बर पर जापानी आक्रमण तथा द्वितीय विश्वयुद्ध में जापान की भागीदारी। अंततोगत्वा इसकी परिणति हिरोशिमा एवं नागासाकी में हुई।

इस प्रकार हम देखते हैं कि जापान के औद्योगीकरण का अनुभव पश्चिमी देशों के अनुभव से पृथक रहा तथा इसने जापान की विदेश नीति पर भी अपना प्रभाव छोड़ा।

Food for Thought

- औद्योगिक क्रांति की जड़ पिछली तीन-चार शताब्दियों में यूरोप में होने वाले सामाजिक-आर्थिक-राजनीतिक परिवर्तनों में कैसे निहित था?
- ब्रिटेन में औद्योगिक क्रांति ने किस प्रकार दूसरों के औद्योगीकरण के मार्ग में बाधा उत्पन्न की?
- जर्मनी, रूस और जापान जैसे देशों ने औद्योगीकरण का अपना अलग रास्ता कैसे बनाया?
- वर्तमान में भारत में आर्थिक नीति के सामाजिक प्रभाव के साथ ब्रिटेन में औद्योगिक क्रांति के सामाजिक प्रभाव की तुलना कैसे की जा सकती है?
- जापान ने औद्योगीकरण के अपने मॉडल के साथ किस प्रकार का प्रयोग किया और एशियाई महाद्वीप पर इसका क्या प्रभाव पड़ा?

■■■

KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR